[struck-out] विषय- संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र — डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
किरातार्जुनीयम् - प्रथमसर्ग, महाराजा कॉलेज,
पद्यांश व्याख्या — आरा।

दिनांक - 20/08/2020

अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलं
तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्।
नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रतां
भृशं नृपोपायनदन्तिनां मदः ॥16॥

अन्वयः- नृपोपायनदन्तिनाम् अयुग्मच्छदगन्धिः मदः तदीयम् अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम् आस्थाननिकेतनाजिरं भृशं आर्द्रतां नयति।

भावार्थ- (नृपोपायनदन्तिनाम्) राजाओं द्वारा उपहार में दिये गये हाथियों का (अयुग्मच्छदगन्धिः मदः) सप्तपर्ण पुष्प की गन्धवाला मद (तदीयम् अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम् आस्थाननिकेतनाजिरम्) उस (सुयोधन) के सभा-भवन के आँगन को, जो अनेक राजाओं के रथों और घोड़ों से भरा हुआ है (भृशम् आर्द्रतां नयति) अत्यधिक गीला बना रहा है। अर्थात् उसके अधीन राज्य करने वाले असंख्य

"Failure comes only when we forget our ideals and objectives and principles." - Jawaharlal Nehru

Scanned with CamScanner

Date ___/___/______ Page No.: ______

राजाओं ने उसे उपहार में अनगिनत श्रेष्ठ हाथी प्रदान किये हैं।

भावार्थ— इस पद्य में दुर्योधन की अर्थ सम्पत्तियों का उल्लेख करते हुए उपहार में प्राप्त हाथियों एवं घोड़ों से उसके महल के आँगन को परिपूर्ण बताया गया है।

पदव्याख्या—(अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम्) अनेक राजाओं के रथों और घोड़ों से भरा हुआ, न एके अनेके, अनेके राजन्याः अनेकराजन्याः (क० धा०) रथाश्च अश्वाश्च रथाश्वम् (द्वन्द्व) 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्' सूत्र से नपुंसकलिङ्ग। अनेकराजन्यरथाश्वेन सङ्कुलमिति अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम्। राज्ञां समूहो राजन्याः, वा राज्ञामपत्यादि पुमांसो राजन्याः। तदीयम् = उसका, तद् + क + ईय। आस्थाननिकेतनाजिरम् = राजसभा-भवन का आँगन। आतिष्ठन्त्यस्मिन् इत्यास्थानम्, अधिकरणे ल्युट्, राजा का सभा भवन, दरबार। निकेतनम् = भवन, अजिरम्=आँगन। आस्थानस्य निकेतनम् आस्थाननिकेतनं (ष० तत्पु०) आस्थाननिकेतनस्य अजिरम् आस्थाननिकेतनाजिरम्। आस्थान= आ + स्था + ल्युट्। निकेतनम् = निकित्यतेऽस्मिन् इति, नि + कित् + ल्युट्। अजिरम् = अज् + इर (किरच् उणादि)। नयति= ले जाता है, पहुँचाता है, बनाता है, नी + लट्। आर्द्रतां नयति =गीला बनाता है।

अयुग्मच्छदगन्धिः = छितवन के फूल की गन्धवाला छितवन में सात पत्ते एक-एक गुच्छे में होते हैं, सात संख्या युग्म संख्या न होकर अयुग्म है, जिसमें जोड़ा नहीं बनता। न युग्मः अयुग्मः (नञ् तत्पु०), अयुग्माः छदाः अस्येति अयुग्मच्छदः

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough." –Rabindranath Tagore

Scanned with CamScanner

Date ___/___/______

(बहु०), तस्य विकारः पुष्पम् अयुग्मच्छदम्। अयुग्मच्छद + अण् = अयुग्मच्छदम्, 'पुष्पमूलेषु बहुलम्' सूत्र से अण् का लोप हो गया। तस्य गन्धः अयुग्मच्छदगन्धः (ष० तत्पु०), अयुग्मच्छदस्य गन्ध इव गन्धो यस्य तद् अयुग्मच्छदगन्धि (बहु०) 'उपमानाच्च' से अन्त में 'इ' जोड़कर गन्धि बना। आर्द्रताम् = आर्द्रस्य भावः आर्द्रता, ताम्। आर्द्र + तल् + टाप्। नृपोपायन-दन्तिनां मदः = राजाओं द्वारा उपहार में दिये गये हाथियों का मद जल, नृपाणाम् उपायनानि नृपोपायनानि (ष० तत्पु०) नृपोपायनानि दन्तिनः नृपोपायनदन्तिनः (क०धा०), तेषां नृपोपायनदन्तिनाम्। उपायन = उपहार, उप+इ+ ल्युट्। अतिशयितौ दन्तौ अस्य दन्ती- दन्त + इनि। मदः = हाथियों के मस्तक से प्रवाहित होने वाला गन्धयुक्त द्रव। इति।

<u>टिप्पणी</u>-

यहाँ उदात्त अलंकार है। जहाँ समृद्धि का वर्णन होता है, वहाँ उदात्त अलंकार होता है। 'समृद्धिमद्वस्तु वर्णनमुदात्तम्' इति॥6॥

Scanned with CamScanner